Made with KINEMAS

कक्षा 9

हिन्दी

संवाद लेखन

Scanned with CamScanner

संवाद लेखन के कुछ उदाहरण

उदाहरण 1: मनीष और आकाश छठी कक्षा के छात्र हैं। दिसंबर की परीक्षाएँ चल रही हैं। इधर भारत-पाकिस्तान की एक दिवसीय क्रिकेट मैच-शृंखला का अंतिम मैच है। दोनों मैच देखना चाहते हैं, परंतु पढ़ाई के दबाव से भी डरते हैं। उनमें हुई बातचीत की कल्पना कीजिए।

मनीष – आकाश! आज शृंखला का आखिरी मैच है। क्या तुम देखोगे?

आकाश – हाँ, जरूर देखूँगा।

मनीष – दोनों टीमें जबरदस्त हैं। मैच देखने में बहुत मजा आएगा।

आकाश – हाँ, आजकल तो विराट भी पूरी फॉर्म में है और अश्विन भी। अश्विन की एक बार फिरकी चल जाए तो पाँच-छः खिलाड़ी गए समझो।

मनीष – वैसे, इस समय भारत की टीम काफी संतुलित और मजबूत है।

आकाश – हाँ, सच में भारतीय टीम का कोई जवाब नहीं।

उदाहरण 2: मुंबई पर हुए आतंकवादी हमले को सुनकर दो छात्राओं की बातचीत।

निशा – कोमल! कल मुंबई पर जो आतंकवादी हमला हुआ, उसे सुनकर तुम्हें कैसा लगा?

कोमल – निशा! यह समाचार तो दिल दहलाने वाला है। मासूम एवं निर्दोष लोगों पर गोली चलाकर आतंकवादियों ने बहुत लोगों को मार दिया।

निशा – आतंक फैलाने वालों को बच्चों, विधवाओं तथा महिलाओं पर भी तरस नहीं आता है।

कोमल – सच, इन्हें तो किसी से कोई मतलब ही नहीं है। इनका तो एक ही उद्देश्य है कि कैसे दहशत फैलाई जाए।

निशा – हाँ, इन आतंकवादियों का न कोई ईमान होता है न धर्म।

उदाहरण 3 : अंजली और मेघा सहपाठी हैं। अंतिम परीक्षा के दिन दोनों वार्ता कर रही हैं।

अंजली – मेघा! कैसी हो? तुम्हारे पेपर कैसे हुए?

मेघा – यह तो रिजल्ट ही बताएगा।

अंजली – मैं तुमसे रिजल्ट नहीं, मैं तो पूछ रही हूँ कि पेपर कैसे हुए?

मेघा – मैथ्स तो अच्छा हुआ पर साइंस में फिजिक्स का एक प्रश्न छूट गया है। और तुम्हारे कैसे हुए?

अंजली – मेरे भी अच्छे हुए हैं। गणित और विज्ञान में तो मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। परंतु इसके रिजल्ट का मुझे भरोसा नहीं रहता।

उदाहरण 4 : मोनिका और सोनिया के बीच लिंग-भेद पर संवाद।

मोनिका – लड़के-लड़की में अंतर समझना हमारी मानसिकता है।

सोनिया – पर यह गलत है।

मोनिका – कैसे?

Scanned with CamScanner

सोनिया – अब निर्मला को ही लो।

मोनिका – कौन निर्मला?

सोनिया – प्रेमचंद जी की उपन्यास की 'निर्मला' तड़प-तड़प कर, सिसक-सिसक कर मरी।

मोनिका – सच! यदि कल्याणी निर्मला पर थोड़ा पैसा खर्च कर देती तो निर्मला की ऐसी दुर्दशा नहीं होती।

सोनिया – पैसा तो कल्याणी अपने पुत्रों के लिए रखती थी।

मोनिका – फिर हुआ न लड़के-लड़की में अंतर।

उदाहरण 5 : घर वापिस पहुँचने पर पिता और पुत्र में संवाद।

चातक – तुम लौट आए बेटा।

पुत्र – हाँ, पिताजी!

चातक – तुमने अपनी, प्यास मिटा ली?

पुत्र – हाँ, पिताजी!

चातक – काश! तीन दिन और ठहर जाते तो तुम्हारी प्यास स्वाति की बूँद ही मिटा देती।

पुत्र – पिताजी अब भी मैंने प्यास वैसे ही शांत की है।

चातक – गंगाजल से नहीं।

पुत्र – नहीं, पिताजी!

चातक – धन्य है तू! पर यह अक्ल तुम्हें आई कैसे?

पुत्र – जब प्राणी अपने प्रण से डगमगाने लगता है तो प्रकृति उसे सजग कर देती है।

उदाहरण 6 : वस्तुओं की निरंतर बढ़ती महँगाई की चिंता को लेकर दो लड़कियों में संवाद।

पहली लड़की – दीदी! महँगाई के कारण मेरा मार्केट जाने का मन नहीं करता।

दूसरी लड़की – इस महँगाई के युग ने मध्यम वर्ग के लोगों का जीना हराम कर दिया है।

पहली लड़की – दीदी! जब घोटाले होंगे तो महँगाई तो बढ़ेगी ही।

दूसरी लड़की – तुम ठीक कहती हो! शायद सरकार भूखा मारकर ही देश की जनसंख्या को घटाना चाहती हो।

उदाहरण 7 : दूरदर्शन के कार्यकमों की गुणवत्ता पर पिता-पुत्री का संवाद।

पिता – आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रमों की होड़ में अच्छे-बुरे का ध्यान नहीं रह गया है।

पुत्री – हाँ पिताजी! ऐसा ही है, पर कुछ अच्छे भी हैं।

पिता – हो सकता है।

पुत्री – पिता जी! कुछ कार्यक्रम ज्ञानवर्द्धक भी आते हैं पर फिल्मी कार्यक्रमों की तो बाढ़-सी आ गई है।

पिता – इन फिल्मी कार्यक्रमों के कारण ही लाखों-करोड़ों विद्यार्थियों को हानि हो रही है।

Scanned with CamScanner

उदाहरण 8 : यात्री और बस चालक के बीच हुआ संवाद।

यात्री – भाई। बस कितने बजे चलेगी?

चालक – साढ़े पाँच बजे।

यात्री – लेकिन साढ़े पाँच तो हो गए हैं, फिर देरी क्यों?

चालक – बस चलने ही वाली है।

यात्री – आजकल बसों के चलने का कोई समय नहीं है। यह आपकी इच्छा से चलती है।

चालक – आप बिना वजह ही मुझसे बहस कर रहे हैं। हमारी बसों का समय है और हम उसी के अनुसार चलते हैं।

उदाहरण 9 : तीन मित्र जंगल में रास्ता भटक गए थे उनका आपस में संवाद लिखिए।

राम – श्याम, मुझे बड़ा डर लग रहा है, कितना भयानक जंगल है।

श्याम – डर तो मुझे भी लग रहा है राम!

राम – ये सब मोहन की वजह से हुआ है।

श्याम – अरे! मोहन कहाँ रह गया? अभी तो यहीं था!

राम – हम कभी घर नहीं पहुँच पाएँगे...

श्याम – चुप करो! मोहन! अरे मोहन!

मोहन – आ रहा हूँ! वहीं रुकना! पैर में काँटा चुभ गया था!

राम – श्याम, बचाओ!

मोहन – डरपोक कहीं का।

राम – तुम आ गए।

मोहन – हाँ आ गया। एक नंबर के डरपोक हो तुम दोनों।

उदाहरण 10 : एक पड़ोसी, रोज सुबह अखबार माँग कर पढ़ने ले जाते हैं, उनके विषय में पति और पत्नी के बीच संवाद।

पति – ज़रा आज का अखबार तो लाना।

पत्नी – अखबार तो पड़ोसी ले गए।

पति – आज भी ले गए?

पत्नी – अखबार तो मैं लाकर दे देती हूँ, पर क्या इस मुसीबत से किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता?

पति – हाँ, इसका एक उपाय है। अखबार वाले से कहना कि कल से हमारा अखबार पड़ोसी के घर डाल जाया करे। मैं उसे लेने चला जाया करूँगा। अपना अखबार ले आया करूँगा तथा उनके घर नाश्ता भी कर आया करूँगा।

Scanned with CamScanner